International Journal of Applied Research 2019; 5(7): 504-506

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(7): 504-506
www.allresearchjournal.com
Received: 23-05-2019
Accepted: 26-06-2019

सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

Corresponding Author:
सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

हल्दीघाटी एवं वीरवर कुँअर सिंह वीर महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय

सीता कुमारी

सारांश :
'हल्दीघाटी' वरी रस–प्रधान आदि महाकाव्य के निर्माता श्री श्यामनारायण पाण्डेय एवं 'वीरवर कुँवरसिंह' राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में जनजागरण का वीर–रस–प्रधान महाकाव्य निर्माता–आरसी प्रसाद सिंह दोनों ही वरी महाकाव्य हिन्दी वीरकाव्य के आकाश में चमकते सितारे जान पड़ते हैं। दोनों अनुपम कृतियाँ जनमानस के लिए नवजागरण का नवीनतम मिशाल है। जिसमें देश काल, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता, भाईचारा, आत्मसमर्पण, राष्ट्रयता भरे भाव, वीरता के भावों का वर्णन सर्वत्र दिखाई पड़ता है। महाकवि आरसी सिंह ने कुँवर सिंह के देहाती परिवेश का भी चित्रण किया है। जहाँ एक साथ किसाना और पशुचारक अपने पशुओं के साथ किसी वटवृक्ष की शीलत छाव में प्रचण्ड गर्मी से बचने के लिए विश्राम करते हैं। प्रकृति के प्रति भी अपने भावों की अभिव्यक्ति का सफल प्रयास है। संकट की घड़ी में कवि ने भक्ति भावाभिव्यक्ति का सौन्दर्य ही है। जिसमें आरसी वर्षों की वृद्धावस्था में भी कुँवर सिंह ने अंग्रेजों से लोहो लिया और अपने देश की शान को गौरवान्वित किया। 'हल्दीघाटी' के नामक महाराणा प्रताप अपने राज्य की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं। वे अपने जीवन का प्रवाह किये बिना ही रणक्षेत्र में जाकर अपने प्रजा की रक्षा के दायित्व का निर्वहन करते हैं। महाराणा प्रताप को मेवाड़ की भूमि से प्रेम था इसलिए मेवाड़ पर मुगलवंश का शासन न हो पाये महाराणा प्रताप ने प्रण किया और अपने दुश्मनों से मुकावला कर धरती को स्वतंत्र रखने की कोशिश अंतिम सांस तक की है।

प्रस्तावना :
'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्यों विषय की शौय पर केन्द्रित है। दोनों महाकाव्य वीर महाकाव्य का आधुनिकतम एवं विकसित रूप है। वीर गाथात्मक महाकाव्य, जो अपनी संरचना एवं शिल्प की संक्षिप्तता और संशिलिष्टता के कारण वीर काव्य के सारे तत्वों को अपने में समाहित करके चलता है। संक्षिप्तता उसके शिल्प की कसावट का मुख्य गुण है, जो उसे वीरोचित शौर्य की अपेक्षा अधिक अर्थ गांभीर्य देती है। यह महाकाव्य भाषा सौन्दर्य के कारण बेहतरीन वीर महाकाव्य का नमूना भी सिद्ध होता है। कई बार यथार्थ के धरातल पर सामाजिक विद्रूपता की खुली अभिव्यक्ति के कारण मुक्त छन्द की किसी कविता की तरह उपस्थित होता है। घटनाओं के चित्रण, अखबारी रिपोर्टाज या सामाचार जैसा भी इसका स्वरूप हो सकता है, लेकिन इस वीर महाकाव्य विधा की अपनी सीमाएं हैं और अपना खास शिल्प भी। सब कुछ होने के बाद भी वीर महाकाव्य में किस्सागोई न हो तो यह महाकाव्य अपना मूल स्वरूप खो देगी।

भारत के विभिन्न क्षेत्रें में हिन्दी साहित्य के काव्यकार और लेखक आज लगातार महाकाव्यों का सृजन कर रहे हैं, किन्तु प्रभावान्विति की दृष्टि से बिहार के महाकाव्यकारों द्वारा रचित् महाकाव्य अतिशय महत्वपूर्ण हैं।

बिहार, उत्तर प्रदेश में शताधिक महाकाव्यकार, लेखक सृजनरत हैं, जिन में लगभग दो दर्जन काव्यकार एवं लेखकों के नाम राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात हैं। वीरोचित शौर्य–गाथा पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होती हैं। यह वीर महाकाव्य अपने प्रारंभिक काल से ही प्रयोग धर्मी रहा है, जिस कारण वीर महाकाव्य की परंपरा विभिन्न आयामों में विकाशमान है। बिहार में वीर महाकाव्य का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। यहाँ वीरोचित गाथा को साहित्यकारों ने समृद्ध किया है, और नई पीढ़ी के काव्य रचनाकारों ने भी इस विधा में अपनी प्रतिभा–प्रभा से उपस्थिति दर्ज की हैं। 'हल्दीघाटी' एवं 'वीर कुँअर सिंह' महाकाव्यों का वीरों की बलिदान की गाथा है।

'हल्दीघाटी' एवं 'वीर कुँवर सिंह' महाकाव्यों के रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं जीवन–दर्शन का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

'श्री श्याम नारायण पाण्डेय' ने 'हल्दीघाटी' में मध्यकालीन भारत के मुगल शासक अकबर एवं राणा प्रताप के बीच 'हल्दीघाटी' के मैदान में होने वाले महासमर की घटनाओं को लक्ष्यकर इस महाकाव्य

का निर्माण किया है। ऐतिहासिक घटनाएं हर नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायिनी सिद्ध होती है।

'आरसी प्रसाद सिंह' ने 'वीर कुँअर सिंह' महाकाव्य की रचना कर हिन्दी साहित्य जगत् में नयी चेतना जागृत करने का कुशल प्रयास किया है जिससे स्वदेश की पुरातन निष्प्राण मृत्तिका को नूतन बनाने का स्वस्थ संदेश मिला और भविष्य में मिलता रहेगा। 'महाराणा प्रताप' एवं 'वीर कुँअर सिंह' दोनों हमारे राष्ट्र–पुरुष हैं। बिहार के बाबू 'वीर कुँअर सिंह' की आर्थिक हालत नाजुक थी, उन्हें सभी अधीनस्थ कर्मचारियों ने अंग्रजों से युद्ध नहीं करने की सलाह दी थी। लेकिन उस वीरवर ने अस्सी वर्ष की उम्र में भी अंग्रेजों से लोहा लिया और अंत में उनकी पराजय हुई। महाराणा प्रताप ने सर्वाधिक शक्तिशाली मुगल शासक अकबर से लोहा लिया। दोनो महाकाव्यों के कथानक वस्तुतः दो वीरों की जीवन गाथाएँ हैं, जिसे पढ़ने के बाद मुर्दे भी प्राणवंत हो जाते है तथा क्षार शोले। इन रचनाओं को समाजिक हित के लिए दर्शाया गया है।

ऐतिहासिक फलक पर दोनों महाकाव्यों के नायक का शौय का गान विस्तार पूर्वक किया गया है। दोनों महाकाव्यों के कथानक राष्ट्रवाद को प्राणवंतता एवं सबलता देने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आज भारत की जो स्थिति बनी हुई हैं, उसे लक्ष्य करने पर हमें सोचना पड़ा है कि आखिर भारत की संरक्षा के क्या उपाय है? जैसे– कौटिल्य ने तो 'अर्थशास्त्र' में लिखा ही है कि हर साधन की रक्षा करनी चाहिए। अतः अखण्ड, स्वशासित एवं प्रभुसत्ता सम्पन्न भारत के लिए जिन ऐतिहासिक घटनाओं को काव्यपटल पर उतारने एवं मनोहारिनी बनाने की जरूरत थी, उसकी पूर्ति हेतु 'हल्दीघाटी' एवं 'वीर कुँअर सिंह' महाकाव्यों की रचना की गयी।

हल्दीघाटी वीरकाव्य श्यामनारायण पाण्डेय रचित है। इसमें उन्होंने 17 सर्गो में मेवाड़ के महराणा की वीरता के बारे में लिख कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। काव्य में महराणा प्रताप, शक्ति सिंह, चेतक आदि के चरित्र का चित्रण बड़ी ही ओजपूर्ण भाषा में किया है। वहीं अकबर, जयसिंह आदि के दोहरे चरित्र को भी उजागर किया गया।

वीरवर कुँअर सिंह श्री आरसी प्रसाद सिंह द्वारा बिहार के बाबू कुँअर सिंह की वीरता के वारे में अपनी ढलती अवस्था में लिखा गया है। इसमें जगदीशपुर के राजा के देश प्रेम और अस्सी वर्ष की अवस्था में घोड़े पर सवार होकर तलवार भाँजते हुए बिहार, उत्तर–प्रदेश, मध्यप्रदेश, तक अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने वाले तथा कभी भी अंग्रेजों के जैसे विश्वविजयी के हाथ न आने वाले वीर शिरोमणि की उत्तेजक गाथा को लिपि बद्ध किया है। कवि ने बड़ी ही बुद्धिमत्ता पूर्वक समाज के हर बच्चों, महिलाओं, पुरुषों के वीरत्व का वर्णन कर पुस्तक को बहुउपयोगी बना दिया है। शोध–प्रबंध पढने से नसें फड़क उठेगी, और शरीर मे वीरता का संचार होगा, पढने से उसका दृश्य स्पष्ट होगा तथा मातृभूमि के प्रति भक्ति भावना जाग्रत होगी।

महाकवि श्यामनारायण पाण्डेय एवं श्री आरसी प्रसाद सिंह दोनों ही आलोच्य महाकाव्यों को सुंदर भाषा में रचा है। दोनों की ही भाषा खड़ी बोली हिंदी है। काव्य छन्दबद्ध है। शैली सुंदर है। दोनों में ही वररस की प्रधानता है साथ ही श्रृंगार रस मिश्रित है। हल्दीघाटी में मानसिंह की बुआ का अकबर के साथ का प्रसंग तथा वीरवर कुँअर सिंह में धर्म का प्रसंग सुंदर अनुभूति प्रदान करते हैं और अन्य भाषाओं की तरह हिंदी में भी अनेक वीर काव्य रचे गये हैं। प्रत्येक वीर काव्य में रचनाकार के अनुसार ऐतिहासिक तथ्य एवं कल्पनाशीलता की प्रधानता होती है। हल्दीघाटी का कथानक ऐतिहासिक तथ्यों से पूरी तरह मेल खाता है। वस्तुतः लेखक श्री श्यामनारायण पाण्डेय ने ऐतिहासिक तथ्यों का पुरा ख्याल रखा है। वही बात श्री आरसी प्रसाद सिंह की वीरवर कुँअर सिंह में भी दृष्टि गोचर होती है। दोनों कवियों ने ऐतिहासिक संदर्भो एवं जनश्रुति का सन्तुलित मिश्रण किया है। अतः दोनों वीर महाकाव्यों के अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई, इसी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास इस संक्षिप्त परिचयम में किया गया है।

शिल्प–विद्यान की दृष्टि से 'हल्दीघाटी' एवं 'वीर कुँअर सिंह' रचना की अपनी महत्ता को महाकाव्य के शिल्प–विद्यान की दृष्टि से 'हल्दीघाटी' एवं 'वीर कुँअर सिंह' की विवेचना के क्रम में पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा महाकाव्यों के संबंध में दी गई परिभाषा, अर्थ आदि की चर्चा की गयी है। इस कड़ी में आचार्य विश्वनाथ द्वारा रचित् 'साहित्य दर्पण' ग्रंथ में महाकाव्यों की बतायी गयी विशेषताओं का वर्णन आवश्यक प्रतीत हुआ है। 'वीरवर कुँअर सिंह' कुल चौदह सर्गों में रचित् है, इसका वर्णन किया गया है। 'हल्दीघाटी' महाकव्य की घटना सत्रह सर्गों में वर्णित है। दोनों महाकाव्य वीर रस से ओत–प्रोत हैं। 'हल्दीघाटी' महाकाव्य की भाषा खड़ी बोली तत्सम प्रधान है 'वीरवर कुँअर सिह' महाकाव्य की भाषा हिन्दी मिश्रित है। अतः दोनो महाकाव्य शिल्प विधान की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से 'हल्दीघाटी' और 'वीरवर कुँअर सिह' महाकाव्य का विश्लेषण उपयुक्त जान पड़ता है। मानव–जीवन, देशकाल, सभ्यता– संस्कृति, आचार–विचार, युग–धर्म, जीवन–संदेश तथा दर्शन आदि तत्वों का समावेश महाकाव्य में किया गया है। इसका वर्णन विस्तार से भी किया जाना चाहिए 'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिह' महाकाव्य यह बताता है कि राष्ट्रीय चेतना की संरक्षा हमारे पूर्वज किस प्रकार से करते आ रहे हैं। महाराणा प्रताप एवं बाबू 'वीरवर कुँअर सिंह' दोनों महान आत्मबलि, वीर एवं राष्ट्र–धर्मी महापुरुष थे। इनसे युवा पीढ़ी एवं जनमानस में नया संदेश का संचार संभव होगा।

'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिह' महाकाव्य के अभिव्यंजना सौन्दर्य (भाव, भाषा, रस, अलंकार, छंद एवं अभिव्यंजना, शैली) पर विचार किया गया है। महाकाव्य शिल्पगत वैशिष्ट्य पर केन्द्रित है। काव्य के अभिव्यंजना सौन्दर्य के अन्तर्गत भाव, भाषा, रस, अलंकार, छंद एवं अभिव्यंजना शैली का समाहार होता इन दोनों महाकव्यों में प्रयोग किये गये भाव, भाषा, रस, अलंकार, छंद और अभिव्यंजना शैली का रेखाकंन कर उनकी महत्ता का निर्धारण किया गया है। काव्य में भावों की सफल अभिव्यंजना अनिवार्य है। इसी से साहित्य में भाव की प्रधानता रहती है। इसका ध्यान रखा गया है।

हिन्दी वीर काव्य की परम्परा में 'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिह' के स्थान निरूपण पर विचार किया गया है। संबंधित आलेखों एवं प्रकाशित समीक्षात्मक पुस्तकों की सीमा में ही सीमाबद्ध किया गया है। दोनों मूल पुस्तकों के अध्ययन–मनन से, यह पता चलता है कि यह युवा पीढ़ी के मानस पटल को कुरेदने में सफल रहता है। यह महाकाव्य का लेखन मानक सीमा के अंदर ही सीमाबद्ध किया गया है।

निष्कर्ष :

'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्यों का संक्षिप्त परिचय बिहार के हिन्दी वीर महाकाव्यकारों अन्य राज्यों के श्यामनारायण पाण्डेय जैसे लेखकों एवं उनकी बहुविध वीर गाथात्मक रचनाओं में इस वैचारिक अध्ययन से यदि इस विद्या के प्रति एक मौलिक समीक्षा दृष्टि को सकारात्मक दिशा प्राप्त हो सके, और इस विद्या के स्वरूप तथा उसके विकास के संदर्भ में चिन्तन विश्लेषन का एक नवीन मार्ग प्रशस्त हो सके तभी मैं अपने इस परिश्रम को सार्थक समझूंगी या मेरे अध्ययन को सार्थकता प्राप्त होगी। दोनों महाकाव्य वीरों के अमर बलिदान एवं कुर्बानी के क्षेत्र में कुछ नये अंशों का समावेश करेगा। वीर महाकाव्य के रूप में 'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्यों का संक्षिप्त मेरे लिए इसलिए रूचिकर सिद्ध हुआ, क्योंकि 'आरसी प्रसाद सिंह' व 'श्याम नारायण पाण्डेय' की अधिकांश रचनाएँ ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित हैं, और

दोनों महाकाव्यकार ने वीर पुरुषों के वीरोचित भावना व देश के प्रति प्रेम के आकर्षण–विकर्षण के माध्यम से इतिहास की नीरस–कथा में सरसता का संचार कर दिया है। देश तथा देशवासियों के प्रति प्रेम संबंधों के विस्तार उनकी लगभग सभी रचनाओं में दृष्टिगत होते हैं।

ऐसा पूर्ववर्ती कवियों में 'भूषण' आदि ने भी किया है। 'पृथ्वी राज रासो' आदि में वर्णित तथ्य इतिहासकारों द्वारा अनुसंधान में प्रमाणित नहीं हो पाया है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि दोनों 'वीर महाकाव्य' हिंदी काव्य जगत् की अमूल्य सम्पदा है।

संदर्भ–सूची :

1. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 'ज'
2. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 127
3. वही, पृ. 89
4. वही, पृ. 119
5. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 119
6. वही, पृ. 44
7. वही, पृ 199